अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : पाँचवीं - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) वाणव्यंतर देवों का दण्डक है-

(क) 20वाँ (ख) 21वाँ

(ग) 22वाँ (घ) 23वाँ ( )

(b) जीव के वर्तमान भव की पर्याय छोड़ने को कहते हैं-

(क) उपपात (ख) मरण

(ग) च्यवन (घ) गति-आगति ( )

(c) समकित मोहनीय का उदय रहता है -

(क) क्षायिक समकित में (ख) क्षयोपशम समकित में

(ग) उपशम समकित में (घ) सास्वादन समकित में ( )

(d) चल, मल व अगाढ़ दोष जिसमें लगते है, उसे कहते हैं-

(क) समकित मोहनीय (ख) मिथ्यात्व मोहनीय

(ग) मिश्र मोहनीय (घ) मोहनीय कर्म ( )

(e) आठ द्रव्येन्द्रिय के थोकड़े का वर्णन चलता है-

(क) पन्नवणा पद-13 (ख) पन्नवणा पद-14

(ग) पन्नवणा पद-15 (घ) पन्नवणा पद-16 ( )

(f) एक बार चार अनुत्तर विमान में उत्पन्न जीव भविष्य में अधिकतम कितने भव करता है-

(क) 8 भव (ख) 13 भव

(ग) 15 भव (घ) 03 भव ( )

(g) 8 आत्मा में 5वाँ भेद हैं-

(क) उपयोग (ख) ज्ञान

(ग) दर्शन (घ) चारित्र ( )

(h) कषाय आत्मा में कितनी आत्मा की नियमा होती है-

(क) 2 (ख) 3

(ग) 4 (घ) 5 ( )

(i) विराधक श्रावक काल करके उत्कृष्ट कहाँ तक जा सकता है-

(क) भवनपति (ख) ज्योतिषी

(ग) लोकान्तिक (घ) 2 देवलोक तक ( )

(j) जो चारित्र के परिणाम से शून्य हो, वह कहलाता है-

(क) संयत (ख) संयतासंयत

(ग) असंयत (घ) मिथ्यादृष्टि ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) आराधक साधु पदवी भी पा सकते हैं। ( )

(b) हंसी मजाक नहीं करने वाले साधु को 'कान्दर्पिक कहाँ जाता है। ( )

(c) नियमा का अर्थ विकल्प नहीं है। ( )

(d) भगवती सूत्र शतक 12 उद्देशक 10 में 8 आत्मा का वर्णन चलता है। ( )

(e) त्रीन्द्रिय के तीन द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं। ( )

(f) चार अनुत्तर के देवता भविष्य में असंख्यात द्रव्येन्द्रियाँ कर सकते हैं। ( )

(g) उसी भव में मोक्ष प्राप्त करने वाला जीव छठें गुणस्थान में आता ही है। ( )

(h) सत्कार-पुरस्कार 19वाँ परीषह है। ( )

(i) चन्द्र और तारा विमानवासी देवों जघन्य स्थिति पाव पल्योपम नहीं होती है। ( )

(j) नव लोकान्तिक की स्थिति जघन्य व उत्कृष्ट 8 पल्योपम होती है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं काल करके सर्वार्थसिद्ध में उत्पन्न हो सकता हूँ। .....

(b) मुझमें चार आत्मा की नियमा होती है। .....

(c) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 3 अहोरात्रि की है। .....

(d) मेरे में पाँच शरीर हो सकते हैं। .....

(e) मैं वैक्रिय करुँ तो उत्कृष्ट 1 लाख योजन झाझेरी कर सकता हूँ। .....

(f) मेरे अनुसार सम्यक्त्व प्राप्ति पूर्व 5 लब्धियाँ करना आवश्यक है। .....

(g) नालिकेर द्वीप के मनुष्य का दृष्टांत मुझमें मिलता है। .....

(h) मैं उपशम श्रेणि सहित ही होता हूँ। .....

(i) मैं एक ऐसा थोकड़ा हूँ, जिसमें इन्द्रियों का कथन क्षयोपशम से होने वाली भावेन्द्रिय की अपेक्षा से बतलाया है। .....

(j) जो मेरी आगति में आ जाता है, वह 8 द्रव्येन्द्रियाँ करके मोक्ष जाता है। .....

प्र.4 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) **असंयत भव्य-द्रव्य देव किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(b) **ज्ञान व चारित्र आत्मा में कौनसी आत्मा की नियमा होती है ?**

.....

.....

(c) **युगलिक मनुष्य वैक्रिय शरीर क्यों नहीं बना सकते, कारण सहित लिखिए।**

.....

.....

(d) **सिद्ध भगवान की अवगाहना लिखिए।**

.....

.....

(e) **युगलिक मनुष्यों की अवगाहना लिखिए।**

.....

.....

(f) **तीन लब्धियों में प्रायोग्य लब्धि को स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

(g) **द्वितीयोपशम के भांगे लिखिए।**

.....

.....

(h) **कौनसे गुणस्थान से सात बोलों का बंध नहीं होता ? सात बोल लिखिए।**

.....

.....

(i) **निर्जरा द्वार लिखिए।**

.....

.....

(j) **चौथे गुणस्थान की आगति व गति मार्गणा लिखिए।**

.....

.....

(k) **कोई मिथ्या दृष्टि जीव सीधा साधु बन सकता है क्या? स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

(l) **नवग्रैवेयक के एक-एक देवता की वैमानिक व मनुष्य के सिवाय भविष्यत् काल की अपेक्षा से द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।**

.....

.....

(m) **वनस्पतिकाय में जीव अनन्त होते हुए भी वर्तमान में द्रव्येन्द्रियाँ असंख्यात क्यों बतायी ? स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

(n) **चार अनुत्तर विमान में गये जीव के भविष्यत् काल में अधिकतम भव व द्रव्येन्द्रियाँ कितनी होती हैं ?**

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **उत्कृष्ट पहला देवलोक साधु की गति किस अपेक्षा से बताई है, स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **आत्मा-8 के थोकड़े का अल्पबहुत्व द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **गुणस्थान द्वार का उदीरणा द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **अन्तर किसे कहते हैं? 12, 13 व 14वें गुणस्थान का अन्तर क्यों नहीं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **दूसरे गुणस्थान से तीसरे गुणस्थान में जीव असंख्यात गुणा होते हैं क्यो? स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **गुणस्थानों में भाव द्वार को लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **समुद्घात की परिभाषा एवं भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **बहुत से सन्नी मनुष्य 4 व 5 अनुत्तर विमानपने तीनों कालों की अपेक्षा से द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **युगलिक मनुष्यों में आगति-गति द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **एक-एक नारकी के नैरयिक की मनुष्य व 5 अनुत्तर विमानपने तीनों काल की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(k) **असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अवगाहना लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(l) **आराधक के भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(m) **नारकी की अवगाहना लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(n) **जो वर्तमान में क्षयोपशम समकित है, किन्तु बाद में उपशम श्रेणि करेंगे, उनकी अपेक्षा से बनने वाले भंग लिखिए।**

.....

.....

.....

.....